ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 | अंक- 5 | जून-I-2018 | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 10.00

परमात्मा भाग्य लिखता नहीं, देता श्रेष्ठ बनने का ज्ञान - शिवानी

'कर्म और भाग्य' विषयक कार्यक्रम में लोगों को कर्म को श्रेष्ठ बनाने के उपाय बताते हुए जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी।

जामनगर-गुज.। ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा प्रदर्शन ग्राउण्ड में आयोजित 'कर्म और भाग्य' कार्यक्रम में जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि जो कुछ मेरे साथ हो रहा है वो कभी न कभी मुझ आत्मा से कर्म हुआ है जो वापिस मुझे मिल रहा है।

उन्होंने बताया कि यदि भगवान हमारा भाग्य लिखता तो हमारा भाग्य परफेक्ट होता। इसलिए जैसे हमारा कर्म परफेक्ट नहीं है वैसे ही हमारा भाग्य भी परफेक्ट नहीं है और एक जैसा भी नहीं है।

जो कर रहे, वो कर्म जो मिल रहा, वो भाग्य

विशेषज्ञा ने कहा कि हमारी सोच, हमारा बोल और हमारा व्यवहार यह हमारा कर्म है और जो मुझे मिल रहा है वो मेरा भाग्य। उन्होंने 'लॉ ऑफ कर्मा' के बारे में बताया कि जो हम फेकेंगे वही रिटर्न आयेगा। इसलिए यदि हमें खुशी, प्रेम, शांति चाहिए, तो हमें दूसरों को भी वही देना होगा। हम जो देंगे वही वापिस हमें मिलेगा।

मन की विकृतियों रूपी मैन्युफैक्चरिंग डिफेक्ट निकालने हेतु परमात्मा से कनेक्शन ज़रूरी

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता ब्र.कु. सुरेश ओबेरॉय ने अपने जीवन का अनुभव साझा करते हुए बताया कि कैसे राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया एवं सात्विक अन्न, भोजन लेने से भी उनके देखने, सोचने का तरीका बदल गया। उन्होंने कहा कि बदला लेने की भावना, गुस्सा, चिड़चिड़ापन, यह सब मैन्युफैक्चरिंग डिफेक्ट निकालने के लिए परमात्मा से कनेक्शन ज़रूरी है।

मन की खुशी के लिए अन्न शुद्ध

उन्होंने सात्विक अन्न, धन और मन के बारे में बताते हुए कहा कि कहते हैं जैसा अन्न वैसा मन, तो अन्न सात्विक हो इसके लिए पहले धन सात्विक होना चाहिए, अगर धन सात्विक नहीं तो अन्न सात्विक नहीं और अगर अन्न सात्विक नहीं तो मन खुश रह नहीं सकता। अगर मन खुश नहीं तो तन हेल्दी रह नहीं सकता, इसलिए सबसे पहले धन को सात्विक करना है। इसके साथ ही सात्विक मन के लिए रोज़ आधा घंटा परमात्म ज्ञान और मेडिटेशन करना है। आत्मा को शक्तिशाली बनाना है।

परमात्मा सही भाग्य बनाने का ज्ञान देता, न कि भाग्य लिखता

उन्होंने कहा कि परमात्मा हमारा भाग्य लिखता नहीं, बल्कि भाग्य अच्छा बनाने की ताकत और ज्ञान देता है। वो भाग्यविधाता हमें भाग्य लिखने का विधान सिखाता है।

'पर्पज़ ऑफ लाइफ' विषय पर डॉक्टर्स के लिए सम्मेलन

टाउन हॉल में वी.आइ.पी. और डॉक्टर्स के लिए आयोजित 'पर्पज़ ऑफ लाइफ' कार्यक्रम में ब्र.कु. शिवानी ने कॉमेन्ट्री के साथ सत्र की शुरुआत करते हुए लोगों से पूछा कि आप अपने जीवन को देखें कि आप क्या परिवर्तन करना चाहते हैं। आपका पर्पज़ ऑफ लाइफ क्या है? उत्तर में कई लोगों ने कहा कि खुश रहना और दूसरों को खुश करना। खुशी के बारे में विशेषज्ञा ने कहा कि खुशी एक परफ्यूम की तरह है, वो देनी नहीं पड़ती, लेकिन अपने आप ही फैलती है। उन्होंने कहा कि पर्पज़ ऑफ लाइफ रिच होने के बजाय हैप्पी बनने का हो जाये। जिनका पर्पज़ ऑफ लाइफ हैप्पी, हेल्दी रहना है तो उन्हें अपने लिए आधा घंटा खुद को देना ही है। हमारी सोच से हमारा भाग्य ही नहीं, पूरे विश्व का भाग्य हम बदल सकते हैं।

'टॉपिकल इशूज़ ऑफ इनफॉर्मेशन सोसायटी इन साइंसेस, एज्युकेशन एंड इकोनॉमिक्स' पर सम्मेलन

सेंट पीटर्सबर्ग-रशिया। ज़ेलेनोग्रैड मॉस्को में 'टॉपिकल इशूज़ ऑफ इनफॉर्मेशन सोसायटी इन साइंसेस, कल्चर, एज्युकेशन एंड इकोनॉमिक्स' विषय पर आयोजित इंटरनेशनल साइंटिफिक कॉन्फ्रेन्स की पंद्रहवीं वर्षगांठ पर ब्रह्माकुमारीज़ रशिया सेंट पीटर्सबर्ग की निदेशिका ब्र.कु. संतोष दीदी को एकेडमी सर्टिफिकेट प्रदान करते हुए सम्मेलन की संयोजिका गलीना मोरोज़ोवा,डायरेक्टर, द इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट्स एंड इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजीज़ ने सामाजिक उन्नति में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता के बारे में बताया और इसे बढ़ावा देने पर ज़ोर दिया।

आधुनिक समय में आने वाली बड़ी चुनौतियों पर चर्चा करते हुए कई वक्ताओं ने जहाँ एक ओर मूल्यों की गिरावट की बात कही, वहीं दूसरी ओर लोगों की सोच के प्रतिमान में आ रहे परिवर्तन के बारे में भी बताया।

द एकेडमी ऑफ फण्डामेंटल साइंसेस की सदस्य बनीं ब्र.कु. संतोष

इंटरनेशनल साइंटिफिक कॉन्फ्रेन्स की पंद्रहवीं वर्षगांठ पर ब्रह्माकुमारीज़ रशिया सेंट पीटर्सबर्ग की निदेशिका ब्र.कु. संतोष को एकेडमी सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। इस अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष ने कहा कि आज आधुनिक तकनीक एवं संस्थाएं लोगों को शांति, खुशी एवं सम्पन्नता प्राप्त कराने में सहायक बन रही हैं, परंतु इनमें बहुत सारी खामियां भी हैं। हम अपना मस्तिष्क और धन नई-नई तकनीक बनाने और उसके विकास में लगाते हैं, लेकिन इसमें उन्हें नज़रअंदाज़ कर देते हैं जो उनका इस्तेमाल करने वाले हैं। इस कारण अधिकतर तकनीकों का इस्तेमाल नकारात्मक रूप से किया जाता है। यदि किसी भी साधन का उपयोग गलत कार्यों को सिद्ध करने के लिए किया जाता है तो वो कभी भी लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकता। विकास सही मायने में तभी लाभप्रद होगा, जब हम तकनीकों का स्वयं एवं दूसरों के प्रति सही तरीके से एवं कल्याण हेतु उपयोग करना सीख जायेंगे।

डॉ. एन्ड्रे ट्यूनयेव,प्रेसीडेंट,द एकेडमी ऑफ फण्डामेंटल साइंसेस ने कहा कि आज मानव चेतना की जो मिसाल कायम हो रही है, उसकी तुलना हम 18वीं-19वीं सदी से कर सकते हैं जब प्रौद्योगिक सोच की शुरुआत हुई। इस परिप्रेक्ष्य में हम भविष्य के लिए क्या बदलाव देखते हैं? इसमें सर्वप्रथम है धार्मिक सोच में बदलाव। एक पूर्णतया नया धर्म आने वाला है जो पुराने सभी धर्मों को पूर्णतया बदल देगा। मैं उस धर्म का नाम तो नहीं जानता, पर वो धर्म लोगों को देवी-देवता जैसा बना देगा। निकट भविष्य में कुछ लोग मानवता की सेवा करके एवं स्वयं में विशेषताओं को धारण करके दिव्य बन जायेंगे।

सम्मेलन में रशिया, टर्की, अज़रबैजान, बेलारूस तथा उजबेकिस्तान से प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों तथा प्रशासकों सहित युवा शोधकर्ताओं एवं इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट्स एंड इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजीज़ के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में प्रो. यदविगा यत्सकेविच,एच.ओ.डी.,सोशल कम्युनिकेशन्स ऑफ बेलारूस स्टेस युनिवार्सिटी,रिपब्लिक ऑफ बेलारूस, विटालि नेस्किन,प्रेसिडेंट,इनवेस्टमेंट एजेंसी ऑफ सेंट्रल फेडरल डिस्ट्रिक्ट ऑफ द रशियन फेडरेशन तथा प्रो. निगिना शेरमुहामेडोवा ने भी अपने विचार व्यक्त किये।